ISSN : 0976-0849

विमर्श

अन्तः अनुशासनात्मक शोध पत्रिका

अंक विशेषांक
महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

पूछताछ हेतु सम्पर्क करें मो.नं. : 9795471750
लेख प्रेषित करें : vimarshmpdc@gmail.com

लेख प्रेषित करने की अंतिम तिथि
25 अप्रैल, 2026

Call for Papers

Vol. – 20
Number – 01
August 2026

विमर्श : अन्तः अनुशासनात्मक शोध पत्रिका एक पीयर रिव्यूड शोध पत्रिका है, जो प्रत्येक वर्ष प्रकाशित होती है। इस शोध पत्रिका का उद्देश्य विद्वानों, शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों को मानविकी और सामाजिक विज्ञान सहित अन्य मुद्दों के बारे में अपनी विशेषज्ञता, ज्ञान और अनुसंधान के अनुभवों पर चर्चा करने और ज्ञान साझा करने के लिए एक प्लेटफॉर्म प्रदान करना है।

यह शोध पत्रिका सभी विद्वानों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को अपने सम्बन्धित क्षेत्रों से वैज्ञानिक उत्कृष्टता के मानदंडों को पूरा करने वाले विद्वत्तापूर्ण मौलिक लेख अथवा शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करती है।

विमर्शः अनुशासन-अंतः विषयक शोध पत्रिका के महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् विशेषांक हेतु निम्नलिखित विषयों पर मौलिक शोध-पत्र आमंत्रित हैं-

- परिषद् की स्थापना : स्वतंत्रता आंदोलन और शैक्षिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक संदर्भ।
- संस्थापक सप्ताह समारोह : 90 वर्षों की सांस्कृतिक परंपरा का विकास।
- शैक्षिक विस्तार का अध्ययन : प्राथमिक विद्यालयों से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय तक परिषद् की संस्थागत यात्रा।
- गोरखपुर शिक्षा मॉडल : ग्रामीण शिक्षा का उन्नयन और राष्ट्रीय विस्तार।
- संस्थापक दृष्टि का विश्लेषण : महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज का स्वदेशी शिक्षा-दर्शन मॉडल।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में परिषद् मॉडल का राष्ट्रीय शिक्षा नीति में समावेश।
- स्त्री-शिक्षा के संवर्धन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का योगदान।

इस विशेषांक का उद्देश्य महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के 90 वर्ष पूरे कर शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ते कदम का समग्र मूल्यांकन करना है, जिसमें 1932 में महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित यह परिषद् शिक्षा के लोकतंत्रीकरण, ग्रामीण साक्षरता, स्त्री-शिक्षा, प्राविधिक प्रशिक्षण और सांस्कृतिक जागरण में अपने विशिष्ट योगदान के साथ-साथ संस्थापक के स्वदेशी शिक्षा, राष्ट्रीय चेतना, चरित्र-निर्माण और स्वावलंबन पर आधारित शैक्षिक दर्शन का समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करेगी।

इस विशेषांक के लिए ऐसे शोध-पत्र आमंत्रित हैं, जो उपरोक्त विषयक के साथ-साथ महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के शैक्षिक लोकतंत्रीकरण, ग्रामीण साक्षरता, स्त्री-सशक्तीकरण, प्राविधिक प्रशिक्षण, सांस्कृतिक जागरण एवं राष्ट्रनिर्माण सम्बंधी 90 वर्षों के योगदान का समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करते हों।

Editor
Dr. Pradeep Kumar Rao

प्रकाशक
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर - 273014, उत्तर प्रदेश, भारत

ISSN : 0976-0830

Mānaviki

A PEER REVIEWED INTERDISCIPLINARY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

Call for Papers

Vol. – 17
Number – 01
March 2026

Special Issue
Indian Knowledge System (भारतीय ज्ञान परंपरा)

Last Date for Submission of Articles
16 February, 2026

For any query Mob. No. 9795471750
Submit your article : manavikimppg@gmail.com

Publication Mode
Bilingual (Hindi & English)

मानविकी (Mānaviki) : मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के लिए एक अन्तरविषयक पीयर रिव्यूड शोध जर्नल है, जो वर्ष में दो बार [वर्ष प्रतिपदा चैत्र शुक्ल (मार्च); विजय दशमी (अक्टूबर)] प्रकाशित होती है। इस शोध पत्रिका का उद्देश्य विद्वानों, शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों को मानविकी और सामाजिक विज्ञान सहित अन्य मुद्दों के बारे में अपनी विशेषज्ञता, ज्ञान और अनुसंधान के अनुभवों पर चर्चा करने और ज्ञान साझा करने के लिए एक प्लेटफॉर्म प्रदान करना है।

यह शोध पत्रिका सभी विद्वानों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को अपने सम्बन्धित क्षेत्रों से वैज्ञानिक उत्कृष्टता के मानदंडों को पूरा करने वाले विद्वत्तापूर्ण मौलिक लेख अथवा शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करती है।

शोध-लेख विषय

- वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृति, दर्शनों और काव्य-परंपरा में निहित ज्ञान-मीमांसा और मनुष्य-दृष्टि।
- आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, ज्योतिष और पारंपरिक चिकित्सा-पद्धतियों की वैज्ञानिक एवं दार्शनिक आधारभूमि।
- भारतीय गणित, खगोल, धातु-विज्ञान, स्थापत्य, कृषि एवं पर्यावरण-संबंधी पारंपरिक ज्ञान।
- भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन शिक्षा-दर्शन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मूल्य-शिक्षा व व्यक्तित्व-निर्माण।
- भारतीय ज्ञान परंपरा, स्त्री-अध्ययन, वंचित समुदायों और लोकपरंपराओं का साझा अनुभव-क्षेत्र।
- वैश्वीकरण, डिजिटल युग और ज्ञान-अर्थव्यवस्था के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता।
- भारतीय ज्ञान परंपरा और सतत विकास, जल-जंगल-जमीन, जलवायु-संकट व पर्यावरण-न्याय।
- तुलनात्मक दृष्टि से भारतीय, पाश्चात्य तथा अन्य एशियाई ज्ञान परंपराएँ।

नोट : आवश्यकतानुसार आप अपने विषय-क्षेत्र से जुड़े अन्य उप-विषय भी प्रस्तावित कर सकते हैं, जो भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप हो।

इस विशेषांक के लिए ऐसे शोध-पत्र आमंत्रित हैं जो भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐतिहासिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों का मौलिक, संदर्भित और समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करते हों। शोध-पत्र में प्रामाणिक स्रोतों का उपयोग, स्पष्ट उद्देश्यों, विधि और निष्कर्षों की सुव्यवस्थित प्रस्तुति अपेक्षित है।

Editors
Pradeep Kumar Rao | Om Jee Upadhyay

प्रकाशक
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर - 273014, उत्तर प्रदेश, भारत